



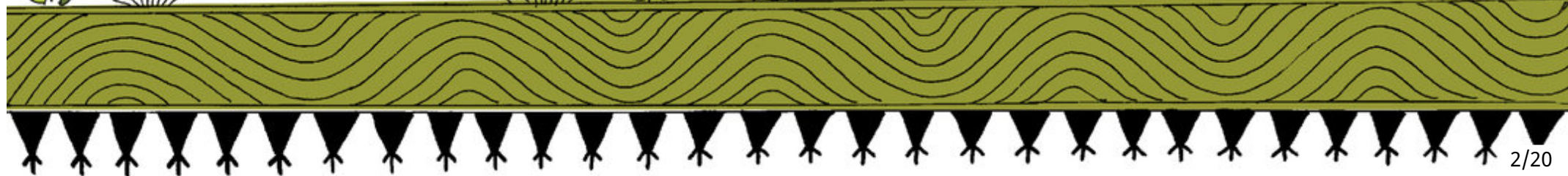
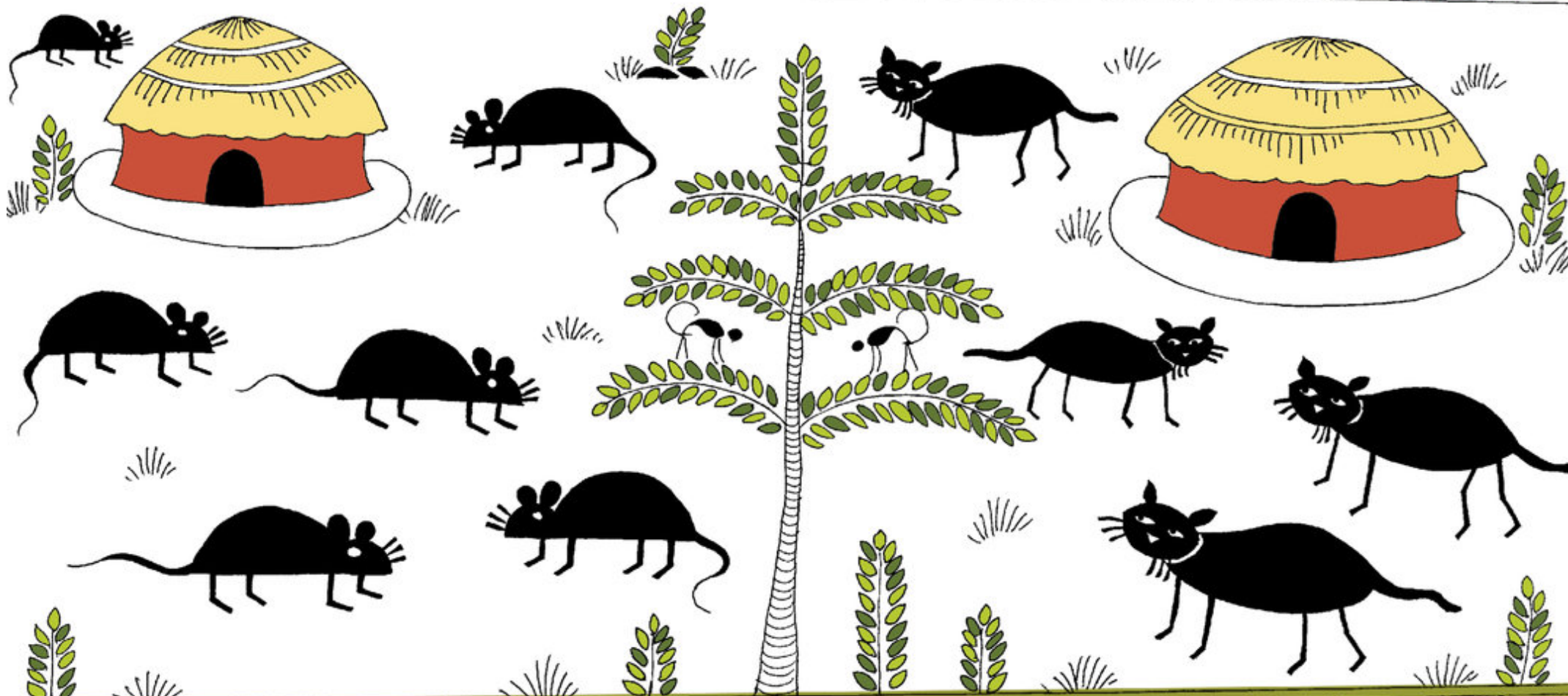
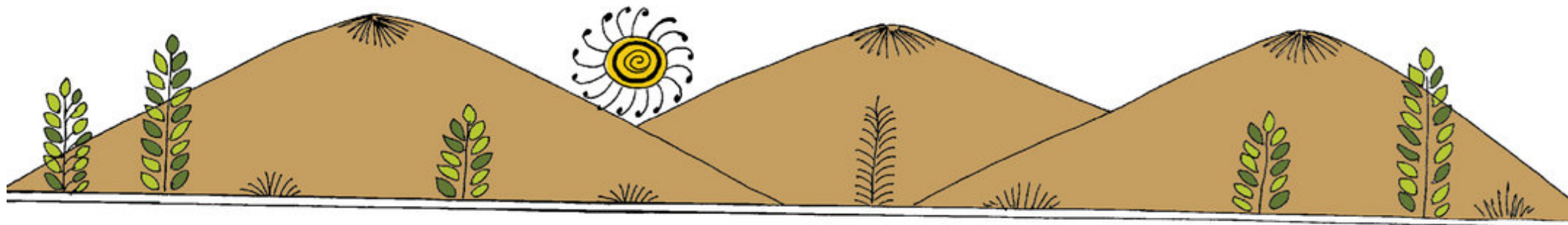
बिल्लियों की दावत

Author: Saura Writers' Group

Illustrator: Kusha Kumar Barik

Translator: Rajesh Khar

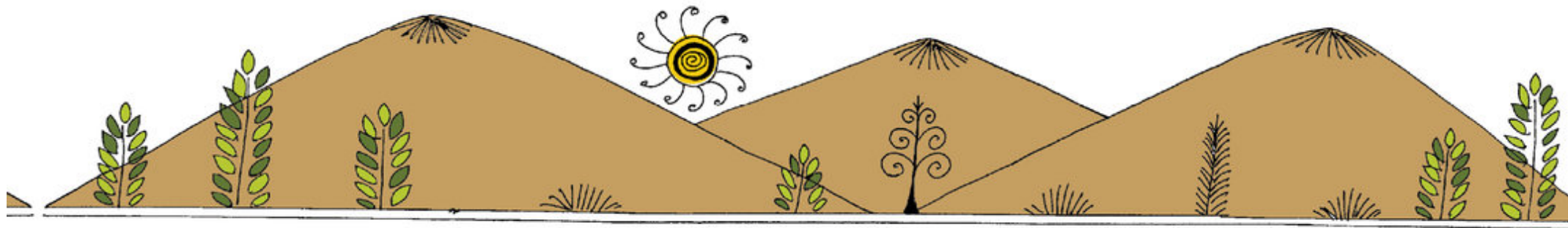
पठन स्तर २



दूर एक गाँव में कुछ मोटी बिल्लियाँ रहती थीं।
उसी गाँव में कुछ चूहे भी रहते थे।



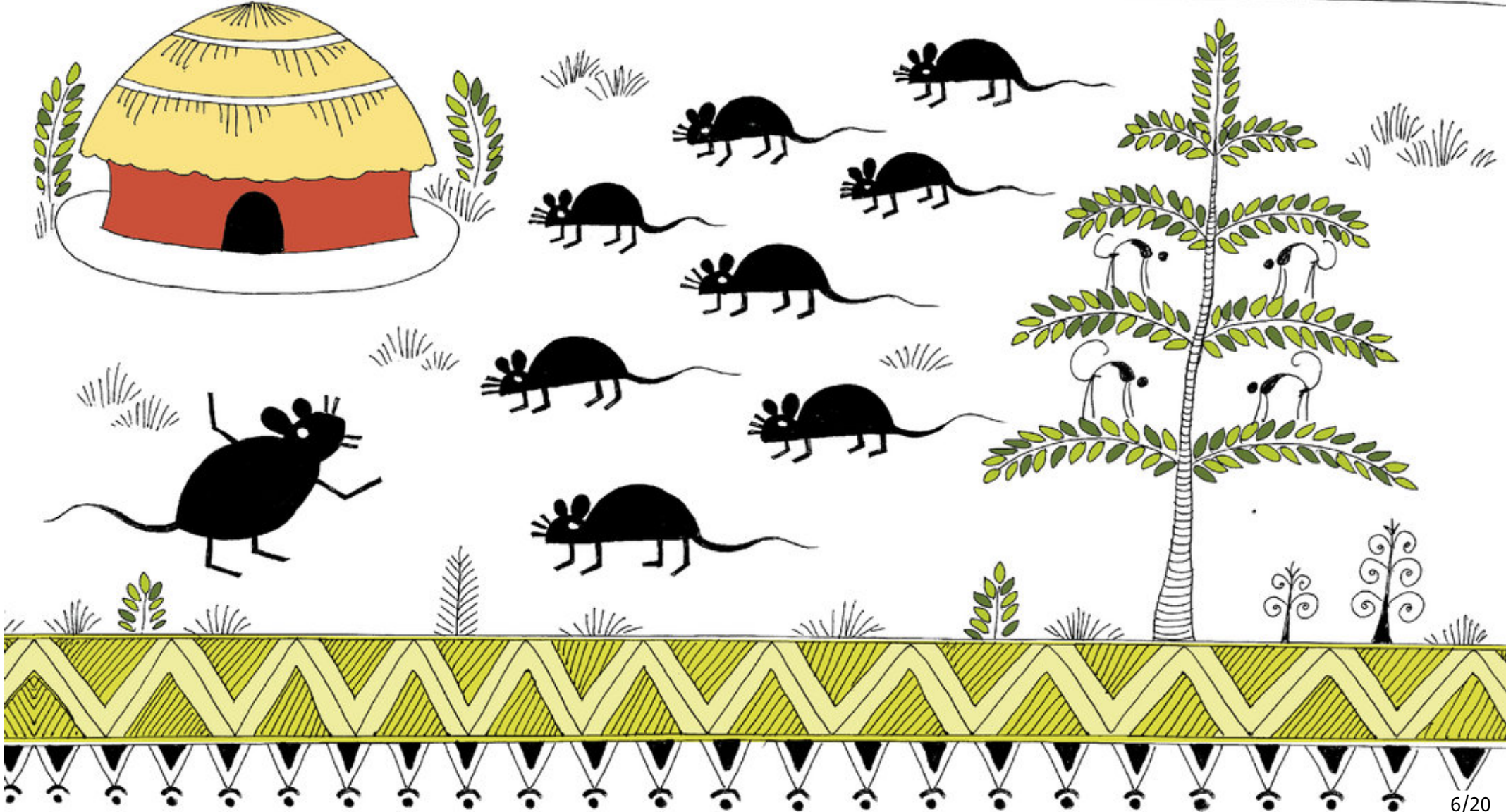
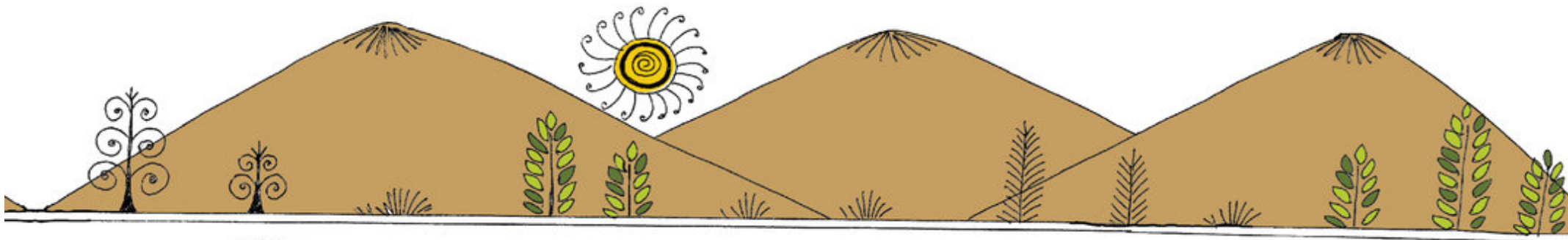
आपको क्या लगता है वे आपस में दोस्त थे?



एक दिन मोटी बिल्लियों ने दावत करने की सोची। उन्होंने हलवाई को बुलवाया। उसने बड़ी सी आग जलाई और भात, पिठा और कई पकवान पकाए।



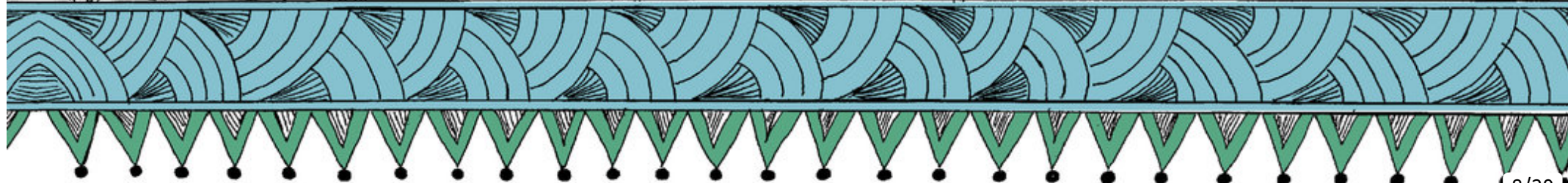
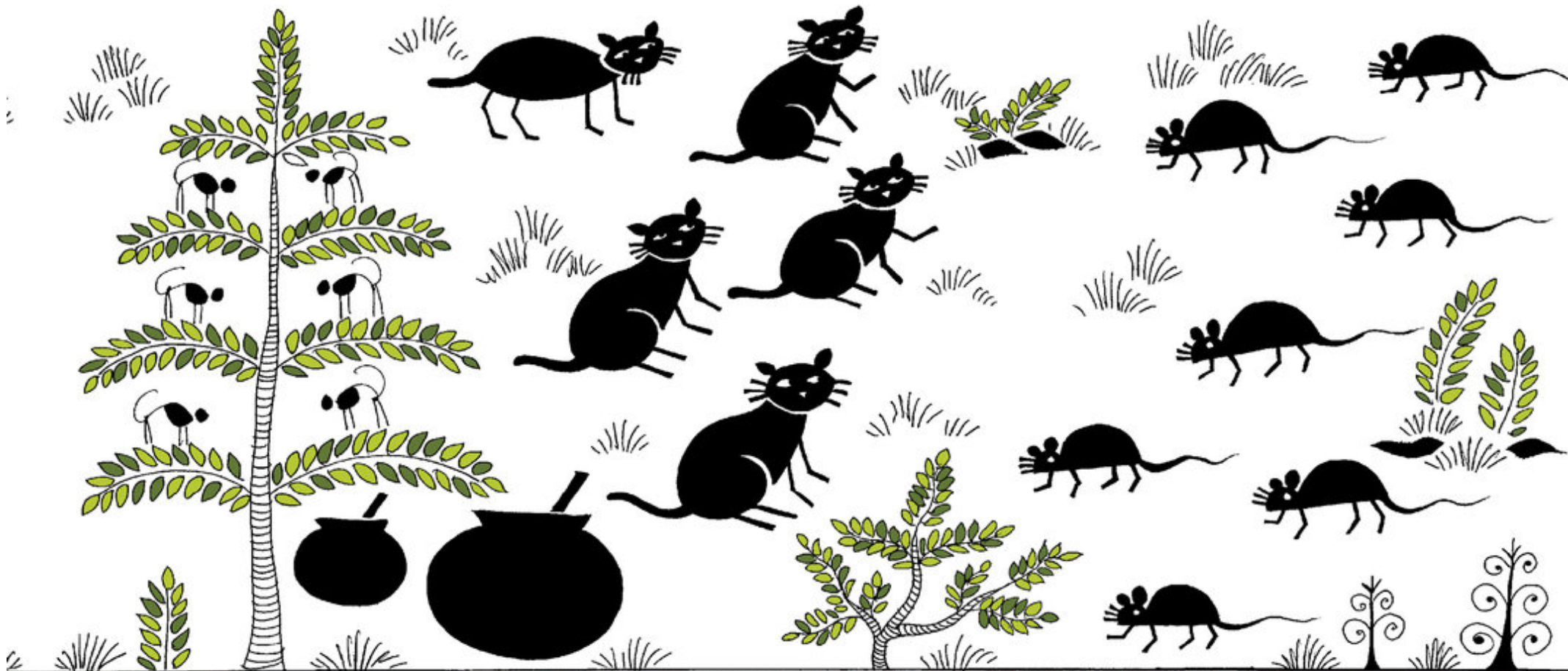
बड़े-बड़े देगों में से अच्छी खुशबू सब जगह फैल गई।
सब के मुँह में पानी आ गया।
अब मोटी बिल्लियों ने चूहों को भी दावत में बुलाया।



चूहे तो खुशबुएँ सूँघ ही रहे थे इसलिये वे बड़े खुश हुए। उन्होंने अपने मुखिया से दावत में जाने की अनुमति माँगी।



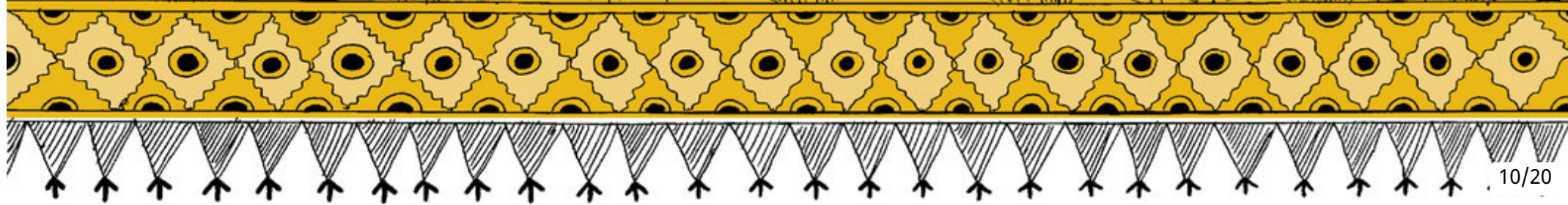
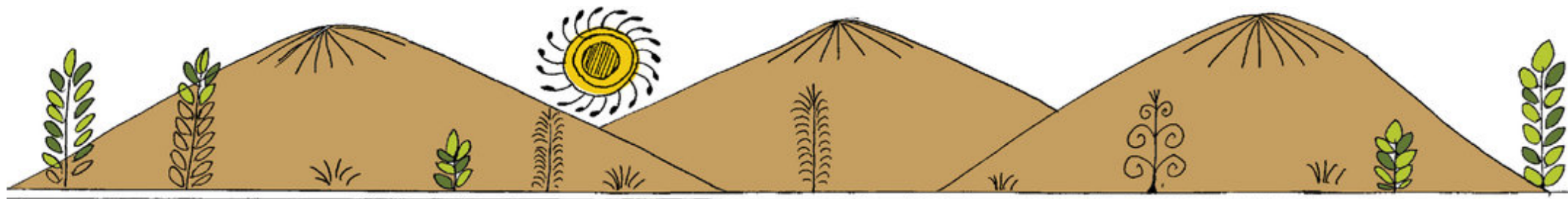
उनके होशियार मुखिया ने कहा, “तुम जा सकते हो पर याद रखना कि बिल्लियाँ हमारी दुश्मन हैं। उनके आसपास सावधान रहना। किसी को चोट नहीं आनी चाहिये। पहले वहाँ अपने नीचे एक बिल खोद लेना। अगर कुछ गड़बड़ हो तो उस राह से भाग निकलना।”



चूहे दावत में गये।



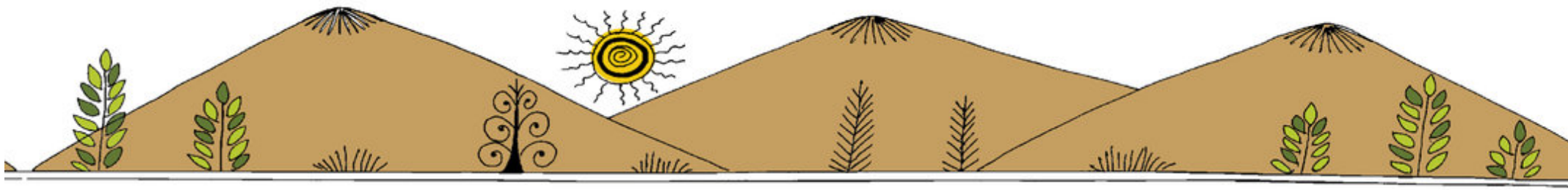
उन्होंने इधर उधर देखा और थोड़ा पिठा खाया।
चुपचाप से अपने नीचे बिल भी बनाते रहे।



संगीत बज रहा था और बिल्ली व चूहे मिलकर नाच रहे थे।
ढम-ढम बजा ढोल और **पीं-पीं** बजी तुरी।



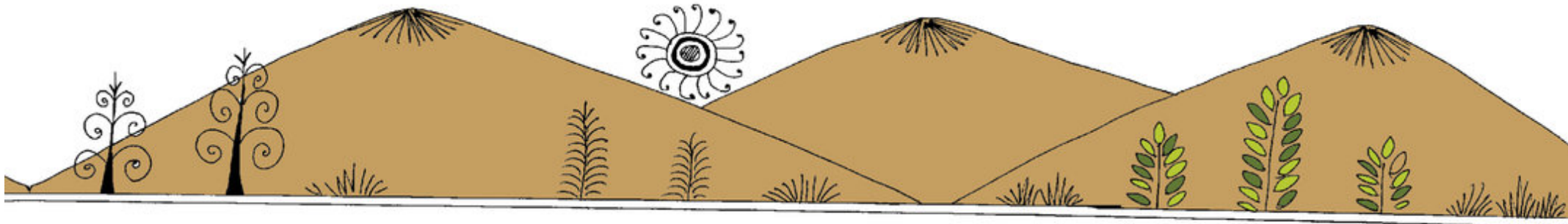
“नाचो गाओ पकड़ो खाओ,” मोटी बिल्लियों ने गाया।



चूहों को इसका मतलब पता था!



“नाचो गाओ भाग जाओ,”
उनका जवाब था।



गाते-गाते वह अपने बिलों के रास्ते से भाग निकले।
मोटी बिल्लियों को हार माननी पड़ी।



भूखी और परेशान वे चली गईं...



... क्योंकि बिना स्वादिष्ट चूहों के भला दावत कैसी!



संकल्पना

भारत की विविध भाषाई समृद्धि बच्चों की कहानियों के लिए एक अनमोल खज़ाना है। दुर्भाग्य से कई जनजातीय भाषाओं में बाल साहित्य पुस्तकों के रूप में नहीं है और न ही बच्चों के लिए मज़ेदार किताबें हैं। क्योंकि बढ़ती संख्या में अब आदिवासी बच्चे स्कूल जा रहे हैं तो पहले से कहीं ज़्यादा आवश्यक है कि उनकी भाषाओं में बाल साहित्य की रचना हो। साहित्य जो उनके परिवेश को दर्शाते हुए किताबों से परे की दुनिया तक की राह खोले क्योंकि पुस्तकें जादुई होती हैं और मनोरंजक तरीके से सूचित और शिक्षित करती हैं। पुस्तकें हर बच्चे को उसके अनूठे तरीके से ज्ञान का एक स्वतः और जीवन भर का साधक बना देती हैं। हर बच्चे के लिए शिक्षा सार्थक हो सके इसके लिए उसे अपनी भाषा में किताबें पढ़ने को मिलनी ही चाहिए।

परियोजना

प्रथम बुक्स और इग्नस ई.आर.जी. ने बर्नार्ड फॉन लियर फाउंडेशन के सहयोग से ओडिशा की चार भाषाओं—मुंडा, कुई, सौरा और जुआँग में बच्चों के लिए पहली दस पुस्तकों को तैयार किया है। कहानियों का लेखन और उनका चित्रांकन इन्हीं भाषाओं के लेखकों और चित्रकारों ने कार्यशालाओं की एक श्रृंखला में किया। इन पुस्तकों की श्रृंखला को हमने नाम दिया है **आदिकहानी**। मुख्यधारा में पर्याप्त स्थान न मिलने वाली संस्कृतियों को एक आवाज़ देने का यह एक महत्वपूर्ण पहला कदम है।

सहयोगी

इग्नस ई.आर.जी. ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विशेष रूप से सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और शिक्षकों को हर सम्भव सहयोग देने में जुटा हुआ है। वे शिक्षा के क्षेत्र में बराबरी और हाशिए पर जी रहे बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

बर्नार्ड फॉन लियर फाउंडेशन हेग स्थित एक अंतर्राष्ट्रीय अनुदान एजेंसी है। इसका ध्येय है सामाजिक और आर्थिक रूप से कठिन परिस्थितियों में जी रहे बच्चों के लिए अवसर जुटाना। मातृभाषा पर आधारित शिक्षा ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को मिले इसके लिये यह एजेंसी प्रयास कर रही है।

यह कहानी सौरा लेखकों के समूह द्वारा लिखी गयी जिसमें एबेन सबार, प्रदीन गमांगो और सृनिबास गमांगो शामिल थे। नव बाल शिक्षण में अनुभव प्राप्त ये सभी नियमित रूप से बच्चों के साथ काम करते हैं। सौरा भित्तिचित्र शैली को आधार मान के कुशा कुमार बारिक ने इसका चित्रांकन किया है। यह प्राचीन सौरा भाषा ओडिशा के गंजाम, गजपति और रायगड़ा जिलों में तीन लाख से अधिक लोगों की भाषा है। सौरा भित्तिचित्रों ने देश भर के कलाप्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया है।



Story Attribution:

This story: बिल्लियों की दावत is translated by [Rajesh Khar](#) . The © for this translation lies with Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'ରାମେଝାନ ଓ କୁମ୍ଭୀରାନ / ବିଲେଇ ଓ ମୁଷା', by [Saura Writers' Group](#) . © Saura Writers' Group , 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Billion Ki Dawat' has been published on StoryWeaver by Pratham Books as a part of Adikahani series of ten books. The development of this book has been supported by Bernard van Leer Foundation along with our Content Partner IgnusERG. www.prathambooks.org

Images Attributions:

Cover page: [A cat and a rat walking in a circle on an artistic bluish green background](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [Cats and rats roaming around in a village](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [Two cats walking on a plain yellow background](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: [Woman cooking in a big pot in a village](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: [Two rats walking on a blue background](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [Rats walking in a group in a village](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: [Two cats walking one after the other on a yellow background](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: [Group of cats facing a group of rats on a grassy ground](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [Two rats walking one after the other on a blue background](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [Cats and rats dancing together](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

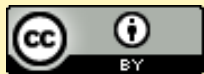


Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

Images Attributions:

Page 11: [Two cats walking on a plain yellow background](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: [Rats running to holes in the ground with cats around them](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: [Two rats walking on a plain blue background](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: [Cats coming back home](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: [Two cats walking one behind the other on a yellow background](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: [Cat watching the rats run back to their holes in the ground](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: [Two rats walking on a blue background](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: [Folk art with bluish green background and borders](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: [Folk art with yellow background and borders](#) by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: [A cat and a rat standing around a cooking pot on fire](#), by [Kusha Kumar Barik](#) © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

बिल्लियों की दावत

(Hindi)

एक बार बिल्लियों ने चूहों को अपने यहाँ दावत पर बुलाया। आप को क्या लगता है कि वहाँ क्या हुआ होगा?

This is a Level 2 book for children who recognize familiar words and can read new words with help.



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!